महात्मा गांधी के आन्दोलनों में महिलाओं की भूमिका

सुमन

इतिहास प्राध्यापिका

आरोही मॉडल विद्यालय डुल्ट

फतेहाबाद

शोध सार–भारत मे वैदिक काल से ही महिलाओं का महत्वपूर्ण स्थान रहा है । महिलाओं के बिना सब कुछ व्यर्थ है । संसार की उत्पत्ति भी इनके बिना नहीं है । प्राचीनकाल में महिलाओं के बारे में मनुस्मृति में मनु ने कहा है कि जहां महिलाओं को सम्मान मिलता है वहां देवता निवास करते हैं । जहां या जिस परिवार में महिलाओं को सम्मान नहीं मिलता वह परिवार नष्ट हो जाता है । प्राचीनकाल से ही महिलाएं प्रत्येक कार्य में पुरूष के कंधे से कंधा मिलाकर चली हैं । भारत को स्वतंत्र करवाने में भी उन महिलाओं का विशेष योगदान रहा है । गांधी जी के आन्दोलनों में इन महिलाओं ने बढचढ कर भाग लिया । इस शोध पत्र में महात्मा गांधी के आन्दोलन में महिलाओं की भूमिका की चर्चा की जायेगी ।

प्रस्तावना–भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलन का वास्तविक प्रारम्भ 1857 की महान क्रांति से ही माना जाता है । भारत की स्वतंत्रता की ओर यह महान क्रांति का प्रथम कदम था । 1857 का विद्रहो मुख्यतः एक सैनिक विद्रोह था जिसे किसानों, दस्तकारों, मजदूरों तथा धर्म गुरूओ का भी समर्थन मिला और यह आम जनता के विद्रोह में बदल गया । 1857 की प्रथम क्रांति से लेकर 1947 तक भारत के आजाद होने तक कई विद्रोह हुए जिनमें महिलाओं ने काफी सहयोग दिया । महिलाओं की स्वतंत्रता संघर्ष में उचित भागीदारी महात्मा गांधी के आन्दोलनों के परिणामस्वरूप हुई । महात्मा गांधी का मानना था कि भारत की आधी आबादी महिलाए है और इनके बिना कोई भी आन्दोलन सफल नही हो सकता 1 महात्मा गांधी जी महिलाओं के सक्रिय सहयोग के पक्षधर थे । गांधी जी ने कहा था कि हमारी मां–बहनों के योगदान के बगैर यह संघर्ष असंभव था । इस बात का इतिहास साक्षी है कि कट्टर रूढिवादी हिन्दू समाज में इसके इतने बडे पैमाने पर महिलाएं सडकों पर कभी नहीं उतरी जिनी महात्मा गांधी के आन्दोलनों में आई ।

गांधी जी ये मानते थे कि महिलाएं सभाओं, आन्दोलनों में बढचढकर भाग लें । वे महिलाओं को यह कह कर प्रेरित करते थे कि देवियो और वीरांगनाओं की तरह आन्दोलनों में उनकी अपनी एक विशेष भूमिका है और उनमें इस भूमिका को निभाने की शक्ति और हिम्मत भी है । उन्होंने महिलाओं को यह विश्वास दिलाया कि उनके बिना आन्दोलन नहीं चल सकते । उन्होंने एक बार कहा था कि "महिलाएं गृह निर्माता हैं और पोषक हैं तथा भारत के पुनरूत्थान में उनकी महत्वपूर्ण भूमिका है ।

असहयोग आन्दोलन–

सन् 1920–22 में जब असहयोग आन्दोलन आरम्भ हुआ तो पहली बार महिलाएं भारी संख्या में आन्दोलन से जुडी । सैकडों महिलाएं खादी और चरखे बेचने गली–गली गईं, उन्होंने खादी को लोकप्रिय बनाने के लिए जुलूस निकाले और समूहों में विदेशी कपडों की होली जलाई । 1921 में कांग्रेस सम्मेलन में 144 महिला

प्रतिनिधियों ने भाग लिया । इसमें 131 महिला स्वैच्छिक कार्यकर्ता और 14 विभिन्न समितियों मे थी । कांग्रेस की कार्यकारिणी में महिलाओं की संख्या में निरन्तर वृद्धि हो रही थी । कस्तूरबा गांधी, सरोजिनी नायडू, एनी बेसेंट, अरूणा आसफ अली आदि रही हैं । इन महिलाओं ने कईबार कांग्रेस का उचित मार्गदर्शन किया । मुम्बई में महिलाओं ने राष्ट्रीय स्त्रीसभा का गठन किया । यह प्रथम महिला संगठन था जो बिना पुरूषों के चलाया जाता था । राष्ट्रीय स्त्रीसभा की सदस्यायें पूरे बम्बई में खादी प्रचार में लगी थीं । स्त्री सभा की सदस्यों ने गांव में बनाई जाने वाली खादी की बिक्री के लिए शहर में कई केन्द्र खोले, प्रदर्शनियां आयोजित की, घर–घर जाकर खादी बेची तथा बिक्री से होने वाली आय को जन साधारण के कल्याण के कार्यों में लगाया गया । इस आन्दोलन में न केवल समृद्ध घरों की महिलाएं आगे आईं बल्कि इस आन्दोलन में श्रमिक वर्ग तथा निम्न वर्ग की महिलाओं ने भी बढ चढ कर भाग लिया । महिलाओं के इन आन्दोलनों में भाग लेने का ही परिणाम रहाा कि समय–समय पर इनके अधिकारों से संबंधित नियम भी बनते रहे तथा उन्हें पारम्परिक कार्यों के अलावा फैक्टरियों आदि में कार्य करने की अनुमति प्रदान की गई तथा उन फैक्टरीयों में उन्हें मूलभूत सुविधाएं भी प्रदान की गई ।

सविनय अवज्ञा आन्दोलन

1930 में प्रारम्भ हुए इस आन्दोलन में महिलाओं ने अपनी भागीदारी और भी अधिक प्रबल ढंग से सुनिश्चित की । 1930 मे सविनय अवज्ञा आन्दोलन अहमदाबाद से डांडी तक 240 मील की डांडी यात्रा से आरम्भ हुआ । यह आन्दोलन अंग्रेजों के नमक कानून तोडने उनके नमक बनाने के एकाधिकार को चुनौती देने के लिए चलाया गया । इस आन्दोलन में गांधी जी को लगा कि डांडी यात्रा अत्यधिक कठिन कार्य है जो कि महिलाओं के लिए कर पाना मुश्किल प्रतीत हुआ लेकिन महिलाओं ने उनकी इस सोच को बदला और पूरे डांडी यात्रा के दौरान जहां–जहां भी उन्होंने सभाएं की वहां सर्वाधिक संख्या में महिलाएं उपस्थित रहीं । डांडी यांत्रा के बाद महिलाओं को आन्दोलन में पूरी तरह सम्मिलित कर लिया गया । हजारों महिलाओं ने नमक सत्याग्रह आन्दोलन में नमक बनाने से लेकर उसके विक्रय का भी कार्य किया । इस नमक सत्याग्रह में कुल 80 हजार जेल भेजे जाने वाले लोगों में 17 हजार महिलाएं थीं ।

सविनय अवज्ञा आन्दोलन में कर और राजस्व के बहिष्कार की प्रतिक्रिया स्वरूप लोगों ने घरों के सामान, उपकरण तथा जमीन आदि नीलाम कर दी जाती थी । इन नीलामियों के बहिष्कार में भी महिआएं आगे आई और नीलामी का सामान लेने वालों के घरों में भूख हडताल या धरना देती थीं जिससे उन्हें सामान लौटाने के लिए मजबूर होना पडता था । इस कार्य में महिलाओं को कई बार अपमान के कडवे घूंट भी पीने पडे । 1930 के दशक में महिलाओ को पहली बार पुलिस दमन का सामना करना पडा । महिलाओं के जत्थे पर लाठियां चलाई गई, जेल भेजा गया फिर भी वे अपने मार्ग से नहीं हटी तथा और भी दृढता से प्रतिरोध का सामना किया । शहरी और ग्रामीण महिलाओं ने 1932–33 में भारी संख्या में गिरफतारियां दी । कहा जाता है कि 1930–35 के बीच 20 हजार महिला सत्याग्रही जेल भेजी गई और उन्हें सजा भी हुई ।

इस आन्दोलन में महिलाओं के अधिक संख्या में भागीदारी की पृष्ठभूमि 1920–30 के मध्य तैयार हो चुकी थी क्योंकि इस दौरान कई महिला संगठन अस्तित्व में आ चुके थे । इन सभी ने महिलाओं की लामबंदी, जुलूस व प्रभातफेरी निकालने, धरने आदि आयोजित करने के काम के साथ–साथ खादी के प्रचार–प्रसार, चरखा चलाने का प्रशिक्षण और खादी बेचने आदि के काम भी किए । जैसे–जैसे आन्दोलन ने

जोर पकडा और उसमें महिलाओं की भागीदारी बढी महिलओं के मुद्दे भी चर्चा में आये । महिलाओं की लामबंदी करने और उनके मुद्दे उठाने में सबसे ज्यादा सक्रिय संगठन आल इण्डिया वूमेन्स कान्फ्रेन्स (A.I.W.C.) था जिसकी स्थापना कांग्रेस ने 1928 में महिलाओं की आन्दोलन में बढती भागीदारी को देखकर की थी ।

भारत छोडो आन्दोलन :

1942 में भारत छोडो आन्दोलन में हजारों की संख्या में महिलाओं ने भाग लिया । इस दौरान महिलाएं क्रांतिकारी पुरूषों के सहयोग के लिए भी तैयार थी तथा उनके गैरकानूनी कार्यों में भी भागीदार बन रही थी । महिलाओं को आत्मरक्षा के कई पशिक्षण भी दिए गए ताकि वे अपनी रक्षा स्वयं कर सकें । इसी साल में महिलओं के आत्मरक्षा की कई समितियां भी बनी जहां उन्हें लाठी चलाने का प्रशिक्षण भी दिया गया । पटना, हुगली, बाली, त्रिपुरा आदि स्थानों पर महिलाओं ने प्रभातफेरियां निकालकर तथा पोस्टरर प्रदर्शनियां लगायी । 1940 के दशक में महिला आन्दोलन पूरी तरह स्वाधीनता आन्दोलन में समाहित हो गया ।

इस प्रकार यदि देखा जाए तो भारत के सम्पूर्ण राष्ट्रीय स्वतंत्रता आन्दोलन में महिलाओं के महत्वपूर्ण योगदान को भुलाया नहीं जा सकता । 1857 की महान क्रांति में झांसी तथा लखनऊ जैसे क्षेत्रों का नेतृत्व रानी लक्ष्मीबाई तथा बेगम हजरत महल ने किया, यह भारतीय महिलाओं के राष्ट्रीय नेतृत्व का प्रारम्भ था । इसके बाद तो जैसे–जैसे राष्ट्रीय आन्दोलन परवान चढता गया, सरोजनी नायडू, कस्तूरबा गांधी, एनी बेसेंट आदि न जाने कितने नाम थे जो भारतीय महिलाओं की प्रेरणास्रोत बने । गांधी जी ने महिलाओं के आत्मत्यागी एवं बलिदानी स्वभाव के हिमायती थे । गांधी जी की सोच थी कि गर्भधारण और मातृत्व के अनुभव से गुजरने के कारण महिलाएं शांति और अहिंसा का संदेश फैलाने के लिए ज्यादा उपयुक्त हैं । गांधीजी स्वयं अपने को दक्षिण अफ्रीकी सत्याग्रही महिलाओं से प्रभावित होने की बात स्वीकारते हैं । गांधीजी ने 1921 में एक बार कहा था कि, "पुरूषों की नजरों में महिलाएं कमजोर नहीं हैं वरन् दोनों लिंगों में ज्यादा श्रेष्ठ इसलिए हैं कि आज भी वे त्याग, खामोश, पीडा, विश्वास और ज्ञान की साक्षात् प्रतिमा हैं ।"

निष्कर्ष

इस प्रकार हम देखते हैं कि महिलाओं की भागीदारी, महात्मा गांधी के राष्ट्रीय आन्दोलन में देखते हैं तो वह उनकी घरेलू भूमिका का विस्तार मात्र ही दिखाती हैं । यद्यपि इस आन्दोलन में उनकी भागीदारी से न तो उनके धरेलू जीवन या पारिवारिक समीकरणों मे कोई अन्तर आया, न उनकी जीवन शैली में कोई परिवर्तन आया और न ही उनकी राजनीतिक भूमिका में कोई बदलाव आया । महिलाओं ने राजीति आन्दोलन में योगदान अवश्य किया लेकिन उसे इसका लाभ न मिल सका । कुछ महिलाओं ने महिला अधिकारों की बात भी की तो उसे भी कांट–छांटकर पेश किया गया । राष्ट्रवादियों ने महिलाओं की भीतरी या बाहरी राजनीतिक गतिविधियों में परम्परा से हटकर कुछ बदलाव लाने की सोची ही नहीं । महिला का कार्यक्षेत्र घर था, उनकी पोषक और त्यागमयी मां की छवि को ज्यों का त्यों बनाकर रखा गया । इस बात पर जोर दिया कि महिलाएं सार्वजनिक क्षेत्र में जाएं तो भी अपना नारी सुलभ गुण नहीं छोडें ।

इस प्रकार यदि देखा जाए तो एक तरफ जहां महिलाओं ने राष्ट्रीय आन्दोलन में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई वहीं दूसरी तरफ इन आन्दोलनों में महिलाओं के सशक्त और प्रभावशाली योगदान के बाद भी पुरूषों

की महिलाओं के प्रति परम्परावादी सोच में कोई परिवर्तन न आ सका । यही कारण रहा है कि स्वतंत्रता के आज 60 वर्षों के बाद भी महिला, अबला तथा कमजोर बनी हुई है । पुरूषों की परम्परावादी मानसिकता में अभी पूरी तरह बदलाव नहीं आया है ।

संदर्भ ग्रन्थ

1. AIWC. Fourth Conference, Mumbai, 1930.
2. AIWC. Annual Report, 1931.
3. Bipin Chandra, Modern India, New Delhi, 1971.
4. BR Nandy, Mahatma Gandhi, H. Biography
5. Bipin Chandra. Indian National Movement :Long Yerm Dynamics, New Delhi, 1988.
6. BL Grover, British Policy towards Indian Nationalism 1885-1909, Delhi-1967.
7. Desai AR. Social Background of Indian Nationalism, Bombay, 1959
8. Harprasad Chattopadhyaya. The Sopoy Mutiny – A Sp\ocial Study & Analysis, Calcutta, 1957.
9. Lata Singh-Role of Women in National Movement
10. PC Josi, Rebellion, 1857. A Symposium, Delhi, 1957.
11. R Palme Dutt. India Today, Bombay, 1949 Edition.
12. RC Majumdar. The Sopoy Mutiny and the Revolt, 1857.
13. Sumit Sarkar, Modern India, 1885-1947, Delhi, 1983
14. SN Sen- 1857.
15. SB Chaudhury. Therories of the Indian Mutiny, 1857.
16. Tara Chand. History of the Freedom Movement in India, 1961, 1.
17. महात्मा गांधी, ग्राम स्वराज्य, नवजीवन प्रकाशन अहमदाबाद, 1936.
18. कांग्रेस का इतिहास खण्ड डॉ0 बी. पटामिसीता रमैया
19. माई एक्सपीरियंस विद टरूथ बाई महात्मा गांधी